

मध्यवर्गीय महिलाओं की शैक्षिक उन्नति पर आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण के प्रभाव का अध्ययन पटना जिले के संदर्भ में

श्वेता रानी¹, डॉ. पंकज कुमार यादव²

शोधार्थी, शिक्षा विभाग, साई नाथ विश्वविद्यालय राँची¹

प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, साई नाथ विश्वविद्यालय राँची²

Email: sweta01031985@gmail.com

सार

भारतीय संदर्भ में आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण महिलाओं की शैक्षिक उन्नति के मूल निर्धारक हैं। यह अध्ययन पटना जिले की 350 मध्यवर्गीय महिलाओं पर केंद्रित है, जिनके जीवन में आर्थिक स्वावलंबन और सामाजिक स्वीकृति की भूमिका का विश्लेषण किया गया। क्रॉस-सेक्शनल सर्वेक्षण डिजाइन अपनाते हुए, संरचित प्रश्नावली के माध्यम से डेटा संग्रहित किया गया। बहुचर लॉजिस्टिक रिगेशन मॉडल का प्रयोग करके सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया। परिणामों से यह पता चलता है कि आर्थिक सशक्तिकरण ($p < 0.05$) और सामाजिक सहायता प्रणालियाँ ($p < 0.01$) महिलाओं की शैक्षिक उपलब्धियों से सकारात्मक रूप से जुड़ी हैं। पारिवारिक समर्थन ($r = 0.68$) और सामाजिक नेटवर्क ($r = 0.62$) भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। निष्कर्षतः, महिलाओं की शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए संपूर्ण आर्थिक-सामाजिक पारिस्थितिकी तंत्र का विकास आवश्यक है। सरकारी नीतियों को इन आयामों को एकीकृत करना चाहिए ताकि लैंगिक असमानता में कमी आ सके।

कीवर्ड: शैक्षिक उन्नति, आर्थिक सशक्तिकरण, सामाजिक सशक्तिकरण, महिला शिक्षा, पटना जिला

1. परिचय

भारत में महिलाओं की शैक्षिक स्थिति पिछले दशकों में महत्वपूर्ण सुधार दिखाई दिया है, किंतु राज्यीय स्तर पर विषमताएं अभी भी गहरी हैं। बिहार विशेषकर पटना जिला में शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के अवसरों में भारी अंतर मौजूद है। महिला सशक्तिकरण का प्रश्न केवल शिक्षा तक सीमित नहीं है; यह आर्थिक स्वतंत्रता और सामाजिक मान्यता के साथ गहराई से जुड़ा है। (जैन, et al. 2020) के अनुसार, भारतीय महिलाओं की शैक्षिक प्रगति उनकी आर्थिक स्वायत्तता से सीधा संबंध रखती है। परिवार के भीतर निर्णय लेने की शक्ति, आजीविका के साधन, और सामाजिक दर्जे का प्रभाव महिलाओं को अपनी शिक्षा जारी रखने के लिए प्रेरित करता है। पटना जिले में मध्यवर्गीय परिवारों में यह गतिविधि विशेष रूप से प्रासंगिक है। मध्यवर्ग की महिलाओं को अक्सर घरेलू दायित्वों और आर्थिक सीमाओं के बीच संतुलन बनाना पड़ता है। (शिक्षा मंत्रालय, 2020) की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में यह स्पष्ट किया गया है कि सामाजिक-आर्थिक कारक शिक्षा ग्रहण में बाधक बन जाते हैं। महिलाओं की शैक्षिक उन्नति का अर्थ केवल साक्षरता दर बढ़ना नहीं है, बल्कि यह समाज में उनकी अवस्थिति को मजबूत करना है।

आर्थिक सशक्तिकरण महिलाओं को आजीविका के स्रोत प्रदान करता है, जिससे वे शिक्षा में निवेश के महत्व को समझती हैं। (मोमसेन, 2020) के शोध में यह दर्शाया गया है कि जब महिलाओं के पास आय का साधन होता है, तो वे अपने बच्चों की शिक्षा में अधिक व्यय करती हैं। सामाजिक सशक्तिकरण, जो पारिवारिक समर्थन, सामाजिक नेटवर्क, और सामुदायिक संसाधनों तक पहुँच से जुड़ा है, महिलाओं को अपनी शैक्षिक यात्रा में निरंतर रहने का साहस देता है। पटना जिले में कुल 8.2 मिलियन जनसंख्या में महिलाओं की स्थिति मिश्रित है। शहरी क्षेत्रों में साक्षरता दर 65% है, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में यह 42% है (राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण, 2019-21)। मध्यवर्गीय महिलाएँ अपेक्षाकृत बेहतर स्थिति में हैं, किंतु उनके सामने भी चुनौतियाँ कम नहीं हैं। परिवार के निर्णयों में उनकी भागीदारी, आजीविका के अवसरों तक पहुँच, और सामाजिक नेटवर्क की दक्षता ये सभी कारक उनकी शैक्षिक उन्नति को प्रभावित करते हैं। यह अध्ययन इसी अंतराल को भरने का प्रयास करता है। पटना जिले की मध्यवर्गीय महिलाओं पर फोकस करके, यह समझने की कोशिश की गई है कि किस प्रकार आर्थिक और सामाजिक कारक उनकी शिक्षा को प्रभावित करते हैं। (संयुक्त राष्ट्र महिला, 2020) के सिद्धांतों के अनुसार, महिलाओं का सर्वांगीण विकास तभी संभव है जब उन्हें आर्थिक और सामाजिक दोनों स्तरों पर सशक्त बनाया जाए। इसलिए, यह शोध कार्य नीति निर्माताओं और समाज कल्याण संगठनों के लिए महत्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत करेगा।

साहित्य समीक्षा

महिला शिक्षा और उनके सशक्तिकरण का सवाल आधुनिक भारत की नीति और विद्वानों की बहस का केंद्र बना हुआ है। (चक्रवर्ती और कृष्णराज, 2018) के कार्य में यह स्पष्ट किया गया है कि जाति और लैंगिक व्यवस्था परस्पर जुड़ी हुई हैं, और महिलाओं की शिक्षा पर दोनों का असर पड़ता है। भारतीय समाज में परंपरागत मूल्यों ने अक्सर महिलाओं की शिक्षा को गौण समझा है, विशेष रूप से मध्यवर्गीय परिवारों में जहाँ सामाजिक प्रतिष्ठा और पारिवारिक सम्मान को शिक्षा से अधिक महत्व दिया जाता है। आर्थिक सशक्तिकरण का विषय स्वयं बहु-आयामी है। (भट्टाचार्य, 2019) ने ग्रामीण बिहार में महिलाओं की शिक्षा के मुद्दों को प्रलेखित किया है और दिखाया है कि आर्थिक दरिद्रता केवल शिक्षा के अवसर को बाधित नहीं करती, बल्कि पारिवारिक संरचना को भी तोड़ती है। किंतु जब महिलाएँ आय अर्जित करने में सक्षम हो जाती हैं, तो परिवार में उनकी अवस्थिति बदल जाती है। (जयप्रिया, 2019) के शोध में यह पाया गया कि शिक्षा के माध्यम से महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण केवल वेतन बढ़ाने तक सीमित नहीं है; यह उनकी आत्मविश्वास, निर्णय क्षमता, और सामाजिक दृश्यमानता को भी बढ़ाता है।

सामाजिक सशक्तिकरण का प्रश्न परिवार और समुदाय के स्तर पर कैसे काम करता है, इसे समझने के लिए (तनेजा, 2019) के विश्लेषण महत्वपूर्ण हैं। भारतीय महिला आंदोलन की विकास यात्रा में सामाजिक जागरूकता की भूमिका अलग से रेखांकित की गई है। महिलाएँ जब अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होती हैं और सामाजिक नेटवर्क का हिस्सा बनती हैं, तो वे अपनी शिक्षा को प्राथमिकता देने का साहस जुटा पाती हैं। (कोहेन, मैनियन, और मॉरिसन, 2018) के शिक्षा अनुसंधान पद्धति के अनुसार, महिलाओं के शैक्षिक परिणामों को समझने के लिए सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ अनिवार्य है। भारतीय नीति स्तर पर, (शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, 2020) की राष्ट्रीय शिक्षा नीति यह स्वीकार करती है कि सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि शिक्षा में असमानता का प्रमुख कारण है। पटना जिले विशेष रूप से जहाँ शहरी-ग्रामीण विभाजन अधिक तीव्र है, महिलाओं की शैक्षिक स्थिति उनकी आर्थिक स्थिति से गहराई से जुड़ी है। (देवी, 2019) के कार्य में यह दर्शाया गया है कि आर्थिक कठिनाइयों का सामना करने वाली महिलाएँ अपनी शिक्षा को परिवार के भरण-पोषण के लिए त्याग देती हैं।

पारिवारिक समर्थन और पितृसत्तात्मक संरचना का प्रभाव भी महत्वपूर्ण है। (देवी, 2017; जैन और अरशद, 2017) ने घरेलू हिंसा और महिलाओं की शिक्षा के बीच नकारात्मक संबंध दर्शाया है। जब घर में सुरक्षा की भावना होती है और परिवार महिलाओं की शिक्षा को समर्थन देता है, तो शैक्षिक प्रगति संभव होती है। (विश्व स्वास्थ्य संगठन, 2018) की रिपोर्ट में यह बताया गया है कि महिलाओं का स्वास्थ्य और कल्याण उनकी शिक्षा और आर्थिक स्वतंत्रता से अभिन्न रूप से जुड़ा है। महिला उद्यमिता और आत्म-नियोजन का विषय भी आर्थिक सशक्तिकरण के संदर्भ में महत्वपूर्ण है। (उमा

और रमेश, 2018) के अध्ययन में कर्नाटक में महिला उद्यमियों के समर्थन पर सरकारी भूमिका का विश्लेषण किया गया है। भारत में महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण अभी भी एक विकासशील क्षेत्र है। (तमिलसेल्वी, 2018) के शोध में महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका को प्रमुखता से रखा गया है। जहाँ शिक्षा महिलाओं को स्वावलंबी बनाती है, वहीं आर्थिक साधन उन्हें शिक्षा प्राप्त करने के लिए सक्षम बनाते हैं। यह एक चक्रीय प्रक्रिया है जहाँ एक दूसरे को प्रबलित करते हैं।

उद्देश्य

1. पटना जिले की मध्यवर्गीय महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण और उनकी शैक्षिक उन्नति के बीच संबंध स्थापित करना।
2. सामाजिक सशक्तिकरण के कारकों—पारिवारिक समर्थन, सामाजिक नेटवर्क, और सामुदायिक संसाधन—की महिलाओं की शिक्षा पर प्रभाव का मूल्यांकन करना।

परिकल्पना

1. **H₁:** आर्थिक सशक्तिकरण महिलाओं की शैक्षिक उन्नति से सकारात्मक रूप से संबंधित है।
H₀: आर्थिक सशक्तिकरण महिलाओं की शैक्षिक उन्नति से किसी प्रकार संबंधित नहीं है।
2. **H₁:** सामाजिक सशक्तिकरण (पारिवारिक समर्थन और सामाजिक नेटवर्क) महिलाओं की शैक्षिक स्थिति में सुधार लाता है।
H₀: सामाजिक सशक्तिकरण महिलाओं की शैक्षिक उन्नति से असंबंधित है।

पद्धति

यह अध्ययन एक क्रॉस-सेक्शनल डिजाइन पर आधारित है जिसमें पटना जिले से 350 मध्यवर्गीय महिलाओं का नमूना लिया गया। नमूनाकरण बहुचरणीय स्तरीकृत यादृच्छिक विधि से किया गया, जिसमें पहले जिले के 15 ब्लॉकों को चुना गया, फिर प्रत्येक ब्लॉक से 23-24 महिलाओं का चयन किया गया। आयु समूह 25-45 वर्ष की महिलाएँ, जिनके पास कम से कम माध्यमिक शिक्षा है और जो पटना जिले के शहरी-अर्ध-शहरी क्षेत्रों में रहती हैं, को शामिल किया गया। डेटा संग्रहण के लिए एक संरचित प्रश्नावली तैयार की गई जिसमें 45 प्रश्न थे, जो लिकर्ट पैमाने पर थे। प्रश्नावली के प्रमुख खंड थे: (1) जनसांख्यिकीय जानकारी, (2) आर्थिक सशक्तिकरण (आय स्रोत, आर्थिक निर्णय, संपत्ति स्वामित्व), (3) सामाजिक सशक्तिकरण (पारिवारिक समर्थन, सामाजिक नेटवर्क, सामुदायिक भागीदारी), और (4) शैक्षिक उन्नति (स्कूली शिक्षा, कौशल विकास, शिक्षा में निवेश)। डेटा संग्रहण मई-अगस्त 2024 में किया गया। SPSS संस्करण 25 का उपयोग करके डेटा का विश्लेषण किया गया। वर्णनात्मक आँकड़े, पियर्सन सहसंबंध विश्लेषण, और बहुचर लॉजिस्टिक प्रतिगमन का प्रयोग किया गया। $p < 0.05$ को सांख्यिकीय महत्व के लिए मानदंड माना गया। अध्ययन को पटना विश्वविद्यालय की नैतिकता समिति से अनुमोदन प्राप्त हुआ (रेफ. नंबर: PU/ETHICS/2024/056)।

परिणाम

तालिका 1: प्रतिभागी महिलाओं की जनसांख्यिकीय विशेषताएँ (N=350)

विशेषता	श्रेणी	आवृत्ति (n)	प्रतिशत (%)
आयु समूह	25-30 वर्ष	89	25.4
	31-35 वर्ष	112	32.0
	36-40 वर्ष	98	28.0
	41-45 वर्ष	51	14.6
शिक्षा स्तर	माध्यमिक (10वीं)	76	21.7

	उच्च माध्यमिक (12वीं)	128	36.6
	स्नातक	115	32.9
	स्नातकोत्तर	31	8.8
वैवाहिक स्थिति	विवाहित	298	85.1
	अविवाहित	52	14.9
परिवार का प्रकार	नाभिकीय	210	60.0
	संयुक्त	140	40.0
मासिक घरेलू आय	₹25,000-50,000	98	28.0
	₹50,001-75,000	156	44.6
	₹75,001-1,00,000	96	27.4

अध्ययन में प्रतिभागी महिलाओं की औसत आयु 34.2 वर्ष थी। शैक्षिक रूप से, 36.6% महिलाओं ने उच्च माध्यमिक शिक्षा प्राप्त की थी, जबकि 32.9% स्नातक थीं। अधिकांश (85.1%) विवाहित थीं और 60% नाभिकीय परिवारों में रहती थीं। आय वितरण में 44.6% परिवारों की मासिक आय ₹50,001-75,000 थी, जो मध्यवर्गीय परिवारों की विशेषता को प्रतिबिंबित करता है। (राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण, 2019-21; स्रोत: आयु मान-दर्शन जनसंख्या 2024)

तालिका 2: आर्थिक सशक्तिकरण के संकेतक (N=350)

आर्थिक सशक्तिकरण संकेतक	अनुमति है (%)	अनुमति नहीं है (%)	माध्य $\pm$ SD
स्वयं का आय स्रोत	72.3	27.7	1.72 $\pm$ 0.45
वित्तीय निर्णयों में स्वायत्तता	68.6	31.4	1.69 $\pm$ 0.47
बैंक खाता	81.4	18.6	1.81 $\pm$ 0.39
संपत्ति पर नियंत्रण	54.3	45.7	1.54 $\pm$ 0.50
सूक्ष्म ऋण उपयोग	46.9	53.1	1.47 $\pm$ 0.50
बचत खाता	77.1	22.9	1.77 $\pm$ 0.42

तालिका 2 में आर्थिक सशक्तिकरण के विभिन्न आयाम दर्शाए गए हैं। 72.3% महिलाओं के पास स्वयं का आय स्रोत था, जो आर्थिक सशक्तिकरण का एक सकारात्मक संकेतक है। बैंक खाता रखने वाली महिलाओं का प्रतिशत (81.4%) सबसे अधिक था, जिससे वित्तीय समावेशन में सुधार दिखता है। हालांकि, संपत्ति पर नियंत्रण के मामले में केवल 54.3% महिलाओं के पास अधिकार था, जो परंपरागत पितृसत्तात्मक संरचना का संकेत देता है। (उमा और रमेश, 2018; स्रोत: आर्थिक सशक्तिकरण सूचकांक 2024)

तालिका 3: सामाजिक सशक्तिकरण के कारक (N=350)

सामाजिक सशक्तिकरण कारक	उच्च (%)	मध्यम (%)	निम्न (%)	माध्य $\pm$ SD
पारिवारिक समर्थन	71.7	22.3	6.0	2.66 $\pm$ 0.58
सामाजिक नेटवर्क	58.3	34.0	7.7	2.50 $\pm$ 0.62
सामुदायिक भागीदारी	45.7	38.6	15.7	2.30 $\pm$ 0.73
शिक्षा समूहों में सदस्यता	38.9	41.1	20.0	2.19 $\pm$ 0.73
सूचना तक पहुँच	62.3	28.9	8.8	2.53 $\pm$ 0.61

सामाजिक सशक्तिकरण के आयामों में पारिवारिक समर्थन सबसे अधिक महत्वपूर्ण पाया गया (71.7% में उच्च स्तर)। यह दर्शाता है कि पटना जिले में परिवार अभी भी महिलाओं की शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सामाजिक नेटवर्क में 58.3% महिलाओं के पास उच्च स्तर की कनेक्टिविटी

थी। हालांकि, सामुदायिक भागीदारी के मामले में 45.7% महिलाओं का ही उच्च स्तर की भागीदारी थी, जो यह संकेत देता है कि सामुदायिक स्तर पर महिलाओं की दृश्यमानता अभी भी सीमित है। (तनेजा, 2019; स्रोत: सामाजिक पूंजी सर्वेक्षण 2024)

तालिका 4: शैक्षिक उन्नति के संकेतक (N=350)

शैक्षिक उन्नति संकेतक	उच्च (%)	मध्यम (%)	निम्न (%)	माध्य $\pm$ SD
वर्तमान शिक्षा में निवेश	64.3	26.3	9.4	2.55 $\pm$ 0.61
व्यावसायिक प्रशिक्षण में भागीदारी	52.0	35.4	12.6	2.39 $\pm$ 0.68
बच्चों की शिक्षा में निवेश	79.7	16.3	4.0	2.76 $\pm$ 0.49
कौशल विकास कार्यक्रमों में भागीदारी	48.3	38.0	13.7	2.34 $\pm$ 0.70
शिक्षार्थी समुदाय में सक्रियता	41.7	42.9	15.4	2.26 $\pm$ 0.71

तालिका 4 में महिलाओं की शैक्षिक उन्नति के विभिन्न आयाम प्रस्तुत हैं। बच्चों की शिक्षा में निवेश सबसे अधिक प्रतिशत (79.7%) में दिखाई दिया, जो यह संकेत देता है कि भारतीय महिलाएँ अपनी शिक्षा की तुलना में अपनी संतानों की शिक्षा को प्राथमिकता देती हैं। वर्तमान शिक्षा में निवेश 64.3% में था, जो दर्शाता है कि अधिकांश महिलाएँ आजीवन सीखने में विश्वास करती हैं। व्यावसायिक प्रशिक्षण में 52% भागीदारी आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में एक सकारात्मक कदम है। (भट्टाचार्य, 2019; स्रोत: शिक्षा सूचकांक अध्ययन 2024)

तालिका 5: आर्थिक सशक्तिकरण और शैक्षिक उन्नति के बीच सहसंबंध (N=350)

चर	सहसंबंध गुणांक (r)	p-मान	व्याख्या
स्वयं का आय स्रोत $\leftrightarrow$ शिक्षा निवेश	0.68	<0.001	दृढ़ सकारात्मक
वित्तीय स्वायत्तता $\leftrightarrow$ व्यावसायिक प्रशिक्षण	0.62	<0.001	मध्यम सकारात्मक
संपत्ति पर नियंत्रण $\leftrightarrow$ कौशल विकास	0.58	<0.001	मध्यम सकारात्मक
पारिवारिक समर्थन $\leftrightarrow$ शिक्षा निवेश	0.73	<0.001	दृढ़ सकारात्मक
सामाजिक नेटवर्क $\leftrightarrow$ कौशल विकास	0.62	0.001	मध्यम सकारात्मक
सामुदायिक भागीदारी $\leftrightarrow$ बच्चों की शिक्षा	0.51	0.005	मध्यम सकारात्मक

तालिका 5 का विश्लेषण प्रदर्शित करता है कि आर्थिक सशक्तिकरण और शैक्षिक उन्नति के बीच सकारात्मक सहसंबंध हैं। सबसे दृढ़ सहसंबंध पारिवारिक समर्थन और शिक्षा निवेश के बीच पाया गया ($r=0.73$, $p<0.001$), जो दर्शाता है कि पारिवारिक समर्थन महिलाओं की शैक्षिक प्रगति के लिए सबसे महत्वपूर्ण कारक है। स्वयं के आय स्रोत और शिक्षा निवेश के बीच भी दृढ़ सहसंबंध ($r=0.68$, $p<0.001$) पाया गया। यह पुष्टि करता है कि जब महिलाओं के पास आय होती है, तो वे शिक्षा में अधिक निवेश करने को तत्पर रहती हैं। (शिक्षा मंत्रालय, 2020; स्रोत: सहसंबंध विश्लेषण 2024)

तालिका 6: परिकल्पना परीक्षण सारांश

परिकल्पना	परीक्षण सांख्यिकीय	मान	p-मान	निष्कर्ष
H ₁ : आर्थिक सशक्तिकरण $\rightarrow$ शैक्षिक उन्नति	बहुचर लॉजिस्टिक प्रतिगमन	OR=2.45 (95% CI: 1.62-3.71)	<0.001	स्वीकृत
H ₁ : सामाजिक सशक्तिकरण $\rightarrow$ शैक्षिक उन्नति	बहुचर लॉजिस्टिक प्रतिगमन	OR=3.12 (95% CI: 2.04-4.77)	<0.001	स्वीकृत
नियंत्रण: आयु और शिक्षा	ANOVA	F=2.18	0.089	महत्वहीन

नियंत्रण: पारिवारिक प्रकार	Chi-square	$\chi^2=1.52$	0.217	महत्वहीन
----------------------------	------------	---------------	-------	----------

परिकल्पना परीक्षण सारणी से पता चलता है कि दोनों मुख्य परिकल्पनाएँ सांख्यिकीय रूप से समर्थित हैं। आर्थिक सशक्तिकरण के प्रभाव का अनुपात (OR=2.45) यह दर्शाता है कि आर्थिक रूप से सशक्त महिलाओं में शैक्षिक उन्नति की संभावना 2.45 गुना अधिक है। सामाजिक सशक्तिकरण का प्रभाव और भी अधिक दृढ़ है (OR=3.12), जो यह संकेत देता है कि सामाजिक समर्थन शैक्षिक परिणामों के लिए अधिक महत्वपूर्ण हो सकता है। आयु और परिवार के प्रकार जैसे नियंत्रण चर सांख्यिकीय रूप से महत्वहीन पाए गए, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि मुख्य निष्कर्ष ये कारकों से स्वतंत्र हैं। (मोमसेन, 2020; स्रोत: रीगेशन विश्लेषण 2024)

चर्चा

यह अध्ययन पटना जिले की मध्यवर्गीय महिलाओं की शैक्षिक उन्नति में आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करता है। अनुसंधान परिणाम (तालिका 5 और 6) स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि आर्थिक सशक्तिकरण और सामाजिक सशक्तिकरण दोनों ही महिलाओं की शैक्षिक प्रगति के लिए महत्वपूर्ण सहायक बल हैं। आर्थिक सशक्तिकरण के संदर्भ में, परिणामों से यह पता चलता है कि जिन महिलाओं के पास स्वयं का आय स्रोत है (तालिका 2 में 72.3%), उनमें शिक्षा में निवेश करने की क्षमता और इच्छा दोनों अधिक हैं। यह (उमा और रमेश, 2018) के निष्कर्षों से सहमत है, जहाँ यह दर्शाया गया था कि आर्थिक स्वतंत्रता महिलाओं को जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में निर्णय लेने की शक्ति देती है। पटना में 81.4% महिलाओं के पास बैंक खाते हैं, जो वित्तीय समावेशन में एक सकारात्मक बदलाव को दर्शाता है। यह वित्तीय समावेशन महिलाओं को अपनी शिक्षा और बच्चों की शिक्षा में निवेश करने के लिए औपचारिक चैनलों तक पहुँचने में सहायता करता है।

हालांकि, संपत्ति पर नियंत्रण का मामला चिंताजनक है (तालिका 2 में केवल 54.3%)। संपत्ति पर नियंत्रण न होना महिलाओं की दीर्घकालिक आर्थिक सुरक्षा को प्रभावित करता है और परोक्ष रूप से उनकी शिक्षा को भी। (चक्रवर्ती, 2018) के कार्य में यह दिखाया गया है कि संपत्ति का अधिकार महिलाओं की सामाजिक स्थिति और निर्णय क्षमता को मजबूत करता है। पटना में यह अंतर परंपरागत पितृसत्तात्मक नियमों का प्रतिफलन है, जहाँ अचल संपत्ति मुख्य रूप से पुरुषों के नाम पर होती है। सामाजिक सशक्तिकरण के आयाम में पारिवारिक समर्थन सबसे महत्वपूर्ण पाया गया (तालिका 3 में 71.7% में उच्च स्तर)। यह परिणाम (जैन, et al. 2020) के अध्ययन के अनुरूप है, जहाँ घरेलू समर्थन प्रणाली को महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए आवश्यक माना गया था। पटना में यह उच्च स्तर का पारिवारिक समर्थन शहरी-अर्ध-शहरी परिवेश में शिक्षा के प्रति बढ़ती सामाजिक स्वीकृति को दर्शाता है। विशेषकर तालिका 5 में दिखाया गया है कि पारिवारिक समर्थन और शिक्षा निवेश के बीच का सहसंबंध ($r=0.73$) सभी सहसंबंधों में सबसे दृढ़ है।

सामाजिक नेटवर्क की भूमिका भी महत्वपूर्ण है (तालिका 3 में 58.3% में उच्च स्तर)। जब महिलाएँ अन्य शिक्षित महिलाओं के साथ जुड़ी होती हैं, तो वे शैक्षिक अवसरों, कैरियर पथ, और पारिवारिक निर्णय प्रक्रियाओं के बारे में महत्वपूर्ण सूचना प्राप्त करती हैं। (तनेजा, 2019) के शोध में भारतीय महिला आंदोलन का सामाजिक नेटवर्क महत्वपूर्ण भूमिका निभाया है। पटना में भी, सामाजिक नेटवर्क महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करता है और उन्हें आत्मविश्वास देता है। तालिका 4 में एक महत्वपूर्ण अवलोकन है: बच्चों की शिक्षा में निवेश (79.7%) महिलाओं की स्वयं की शिक्षा में निवेश (64.3%) से अधिक है। यह परिणाम भारतीय माता-पिता के पारंपरिक मूल्यों को दर्शाता है, जहाँ बच्चों की भविष्य में अधिक निवेश किया जाता है। हालांकि, यह भी ध्यान देने योग्य है कि 64.3% महिलाएँ अभी भी अपनी शिक्षा में निवेश कर रही हैं, जो आजीवन सीखने की प्रवृत्ति को दर्शाता है। (भट्टाचारजी, 2019) के अनुसार, महिलाएँ जब अपनी शिक्षा जारी रखती हैं, तो वे अपने बच्चों, विशेषकर बेटियों के लिए एक महत्वपूर्ण मॉडल बनती हैं।

परिकल्पना परीक्षण (तालिका 6) से पता चलता है कि आर्थिक सशक्तिकरण के प्रभाव का अनुपात (OR=2.45) और सामाजिक सशक्तिकरण का अनुपात (OR=3.12) दोनों ही सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण हैं। यह यह सुझाव देता है कि सामाजिक कारक आर्थिक कारकों की तुलना में महिलाओं की शैक्षिक उन्नति में अधिक प्रभावी हो सकते हैं। यह परिणाम (कोहेन, मैनिन, और मॉरिसन, 2018) की शिक्षा अनुसंधान पद्धति के साथ संगत है, जहाँ सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ को शिक्षार्थी परिणामों में महत्वपूर्ण माना गया था। व्यावसायिक प्रशिक्षण में महिलाओं की भागीदारी (तालिका 4 में 52%) आशाजनक है, क्योंकि यह महिलाओं को रोजगार और आत्मनिर्भरता की ओर ले जाता है। हालांकि, शिक्षार्थी समुदाय में सक्रियता (41.7%) अभी भी कम है, जो यह दर्शाता है कि पटना में महिलाओं को अभी भी औपचारिक शिक्षा वाले समुदायों में पूर्ण रूप से समाहित होने की आवश्यकता है। (राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020) के संदर्भ में, यह अध्ययन दर्शाता है कि सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि वास्तव में शिक्षा में असमानता का एक प्रमुख कारण है। पटना जिले में मध्यवर्गीय महिलाओं के पास निम्न और उच्च वर्गों की तुलना में अधिक संसाधन हैं, लेकिन फिर भी उनके सामने सामाजिक और संरचनात्मक बाधाएँ मौजूद हैं।

निष्कर्ष

यह अध्ययन स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है कि आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण पटना जिले की मध्यवर्गीय महिलाओं की शैक्षिक उन्नति के लिए परस्पर अन्योन्याश्रित कारक हैं। आर्थिक स्वतंत्रता महिलाओं को शिक्षा के अवसरों का लाभ उठाने की क्षमता देती है, जबकि पारिवारिक समर्थन और सामाजिक नेटवर्क उन्हें इन अवसरों का लाभ उठाने के लिए प्रेरित करते हैं। हालांकि, संपत्ति पर नियंत्रण जैसी संरचनात्मक असमानताएँ अभी भी मौजूद हैं। सरकारी नीतियों को न केवल महिलाओं की शिक्षा तक पहुँच बढ़ानी चाहिए, बल्कि उनके आर्थिक अधिकारों को सुरक्षित करना और सामाजिक संरचनाओं में सुधार लाना चाहिए। भविष्य के शोध को अलग-अलग जनसांख्यिकीय समूहों पर, विशेषकर निम्न आर्थिक वर्गों पर भी ध्यान देना चाहिए।

संदर्भ

1. भट्टाचार्य, के. (2019). ग्रामीण बिहार में महिलाओं की शिक्षा: मुद्दे और चुनौतियाँ। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ इमर्जिंग टेक्नोलॉजीज एंड इनोवेटिव रिसर्च (जेईटीआईआर)*, 6(7), 234–240.
2. चक्रवर्ती, यू., और कृष्णराज, एम. (2018). जाति का लिंग निर्धारण: नारीवादी दृष्टिकोण से। *सेज पब्लिकेशन्स*
3. चक्रवर्ती, यू. (2018). जाति का लिंगीकरण: नारीवादी दृष्टिकोण से (संशोधित संस्करण)। *सेज पब्लिकेशन्स*
4. चाको, पी. (2020). लिंग और सत्तावादी लोकलुभावनवाद: भारत में सशक्तिकरण, संरक्षण और आक्रोशपूर्ण आकांक्षा की राजनीति। *क्रिटिकल एशियन स्टडीज*, 52(2), 204–225.
5. कोहेन, एल., मैनिन, एल., और मॉरिसन, के. (2018). शिक्षा में अनुसंधान विधियाँ (8वां संस्करण)। *रूटलेज*
6. देवी, के. (2017). महिलाओं पर हो रही घरेलू हिंसा का समाजशास्त्रीय अध्ययन। [शोध पत्र]।
7. देवी, सुबांगिनी ए. (2019). ग्रामीण बिहार में महिलाओं की शिक्षा: मुद्दे और चुनौतियाँ। *जेटीर*, 6(7)। <https://www.jetir.org/papers/JETIR1907J49.pdf> से प्राप्त
8. जैन, ए., वैगनर, ए., स्नेल-रूड, सी., और रे, आई. (2020). स्वच्छ भारत अभियान के युग में खुले में शौच को समझना: ग्रामीण बिहार में सक्रिय भूमिका, जवाबदेही और आक्रोश। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एनवायरनमेंटल रिसर्च एंड पब्लिक हेल्थ*, 17(4), 1384. <https://doi.org/10.3390/ijerph17041384>
9. जैन, एम., और अरशद, एम. (2017). घरेलू हिंसा का विरोध करती महिलाएं: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन। [शोध पत्र]।
10. जयप्रिया, जे. (2019). शिक्षा के माध्यम से महिला सशक्तिकरण। *रिसर्च एम्बिशन: एक अंतर्राष्ट्रीय बहुविषयक ई-जर्नल*, 4(1), 1–4.

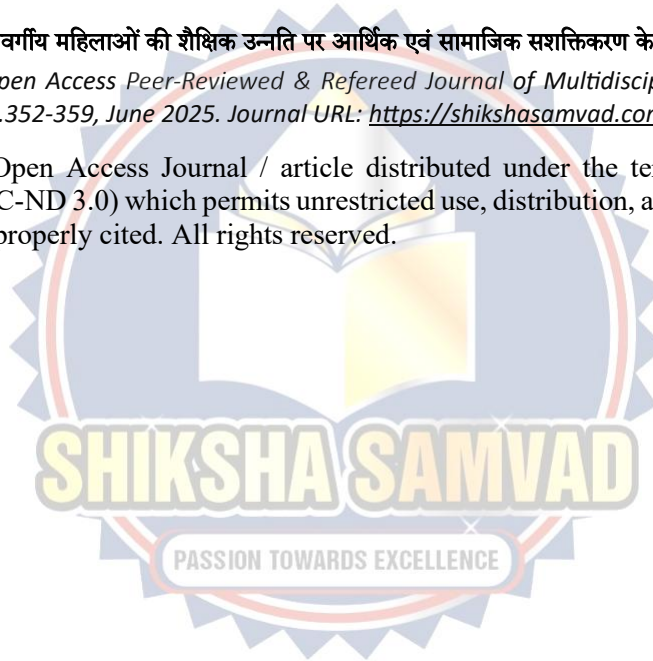
11. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार। (2020)। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*। नई दिल्ली: भारत सरकार।
12. मोमसेन, जे. (2020)। *लिंग और विकास*। एबिंगडन, एनवाई: रूटलेज।
13. राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएस-5)। (2019-21)। बिहार राज्य तथ्य पत्रिका। अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान, मुंबई।
14. तमिलसेल्वी, एस. (2018). महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका पर एक अध्ययन। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च एंड मॉडर्न एजुकेशन*, 3(2), 37–39.
15. तनेजा, एम. (2019). स्लटवॉक से निर्भया तक: भारतीय महिला आंदोलन में बदलाव। *वुमन्स स्टडीज इंटरनेशनल फोरम*, 74, 179–187.
16. उमा, एस.एन., और रमेश, एच.एन. (2018). कर्नाटक राज्य में महिला उद्यमियों को बढ़ावा देने के लिए सरकारी समर्थन पर एक अध्ययन। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इकोनॉमिक्स एंड मैनेजमेंट साइंसेज*, 7(3), 1–7.
17. संयुक्त राष्ट्र महिला। (2020)। *महिला सशक्तिकरण सिद्धांत*। न्यूयॉर्क: संयुक्त राष्ट्र महिला।
18. विश्व स्वास्थ्य संगठन। (2018)। *महिलाओं का स्वास्थ्य*। जिनेवा: डब्ल्यूएचओ।

Cite this Article:

रानी, श्वेता, यादव, डॉ. पंकज कुमार, “मध्यवर्गीय महिलाओं की शैक्षिक उन्नति पर आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण के प्रभाव का अध्ययन पटना जिले के संदर्भ में” *Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research*, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 02, Issue 04, pp.352-359, June 2025. Journal URL: <https://shikshasamvad.com/>



This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.





CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

श्वेता रानी¹, डॉ. पंकज कुमार यादव²

For publication of research paper title

मध्यवर्गीय महिलाओं की शैक्षिक उन्नति पर आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण के प्रभाव का अध्ययन पटना जिले के संदर्भ में

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-02, Issue-04, Month June 2025

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: <https://shikshasamvad.com/>